

स्वतंत्र भारत

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भरत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

विज्ञान और महिलाएं

यूनेस्को की एक टीम का यह अध्ययन बेहद चिंताजनक है कि विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) में महिलाओं की भागीदारी सिर्फ 35 फीसदी है, जो पिछले दस साल से स्थिर है। यह स्थिति गणित के डर, लैंगिक रूढ़िवादित और कम आत्मविश्वास के कारण है। सिर्फ भारत नहीं, पूरी दुनिया में शुरू से ही गणित में लड़कियों के आत्मविश्वास को कम कर दिया जाता है। एक आंकड़े के मुताबिक, 2018 से 2023 के बीच दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में डाटा और एआई क्षेत्रों में मात्र 26 फीसदी महिला कर्मचारी थीं। उस अवधि में इंजीनियरिंग में 15 फीसदी और क्लाउड कंप्यूटिंग में 12 प्रतिशत महिलाएं काम कर रही थीं। वैसे तो दुनिया के 68 फीसदी देशों में एसटीईएम शिक्षा को समर्पित देने वाली नीतियां हैं, पर इनमें से केवल आपी ही लड़कियों पर केंद्रित हैं। यूरोपीय संघ में आईटी डिग्री लेने वाली चार लड़कियों में से मात्र एक के डिजिटल नैकरी में जाने, जबकि दो में एक लड़के के डिजिटल क्षेत्र में जाने का अनुपात इस फर्क को बताता है। अध्ययन कहता है कि यह स्थिति बदलनी चाहिए और बदलाव की शुरूआत स्कूलों से की जानी चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि प्राथमिक शिक्षा में लिंग निरपेक्ष भाषा का इस्तेमाल किया जाये, महिलाओं को कक्षा में अतिथि वक्ता के तौर पर बूलाया जाये और एसटीईएम को लड़कियों की रुचि से जोड़ा जाये। लड़कियों को एसटीईएम में सफल महिलाओं को रोल मॉडल के रूप में देखने का अवसर भी मिलना चाहिए। तभी वे इस क्षेत्र में करियर बनाने के बारे में सोच पायेंगी। डिजिटल दक्षताओं का एक ढांचा तैयार किया जाना चाहिए, जो सभी शिक्षार्थियों को उन कौशलों के लिए मार्गदर्शन प्रदान करे। भारत में एसटीईएम क्षेत्र में लड़कियों की कम भागीदारी से संबंधित एक रिपोर्ट के अनुसार, इन विषयों में महिला शिक्षकों के कम होने से भी लड़कियों को लगता है कि यह क्षेत्र उनके लिए नहीं है। गणित, विज्ञान, इंजीनियरिंग और तकनीकी क्षेत्रों में महिलाओं की कम भागीदारी लैंगिक मुद्दे से अधिक सामाजिक प्रगति का बाधक है। तकनीकी रूप से समृद्ध विश्व बनाना है, तो लड़कियों को छोटी उम्र से ही यकीन दिलाना होगा कि गणित, विज्ञान और तकनीकी शिक्षा में उनकी भी उतनी ही जगह है, जितनी लड़कों की है।

दवाओं का चयन

कोई भी बीमारी अगर थोड़ी भी जटिल या गंभीर हो जाए तो उसके इलाज का खर्च असमान पर पहुंच जाना अब खास बात नहीं है। कमज़ोर और गरीब वर्गों के लोगों के लिए तो ऐसा इलाज करना सुमिकिन ही नहीं होता क्योंकि इसका खर्च उठा पाना उनकी सामर्थ्य से ही बाहर होता है। इलाज में भी डॉक्टर की फीस, वार्ड व तमाम तह की जांचों में ही काफी पैसा लग जाता है तो लैकिन इसमें दवाओं पर होने वाला खर्च सबसे ज्यादा होता है। इससे राहत दिलाने के लिए सरकार ने जेनेरिक दवाओं की व्यापक स्तर पर सुलभता बढ़ाने के लिए प्रयास तो किए मगर उनका कोई खास फायदा नहीं हो रहा है। डॉक्टरों से उम्मीद यह की जाती है कि वे मरीजों, खासकर गरीब मरीजों की सामर्थ्य का गंभीरता से ध्यान रखेंगे और इलाज में बेवजह खर्च से उहें बचाएंगे पर तमाम निर्देशों-अपीलों के बाद भी उनका बड़े ब्रांड की कंपनियों की महंगी दवाएं लिखने का क्रम जारी है। गत दिनों लखनऊ के कुछ सरकारी चिकित्सा संस्थाओं के चिकित्सकों द्वारा ऐसी ही महंगी दवाएं लिखने के मामले सामने आए जिसके बाद स्वास्थ्य विभाग ने इस बारे में सख्त निर्देश जारी किए। इसके पीछे मुख्य कारण बड़ी कंपनियों द्वारा अनुचित आर्थिक लाभ देकर डॉक्टरों को अपने प्रभाव में कर लेना है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए पिछले माह दवाओं की कीमतों, और कंपनियों की अनैतिक मार्केटिंग के चलन पर अंकुश लगाने से जुड़े एक मामले की सुनवाई करते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि चिकित्सक अगर केवल जेनेरिक दवाएं ही लिखते तो दवा कंपनियों और चिकित्सकों के बीच रिश्तेखोरी के कारण पैदा हुई इस समस्या पर नियंत्रण पाया जा सकता है। मरीजों के लिए डॉक्टर जो महंगी दवाएं लिखते हैं, उहोंने ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी और समान असर बाली उपयोगी जेनेरिक दवाओं की कीमत कम हो सकती है। लेकिन अधिक लाभ और सुविधाओं में फंसे डॉक्टर किसी खास ब्रांड की दवा लिखते हैं। ऐसे में कंपनियों की मुनाफाखोरी और डॉक्टरों के उनके प्रति द्युकाव का खामियां गरीब मरीजों को भुगतान पड़ता है।



काँव-काँव

भारत में बड़े जासूसी नेटवर्क का हुआ खुलासा बहुत दिनों के बाद नींद खुली सरकारों की! सुकमा में सोलह नक्सलियों का आत्मसमर्पण जंगलों को बचाने वाला कोई नहीं बचेगा! पतंजलि समूह की याचिका हाईकोर्ट से खासिर्ज ऐसे तनावों से बचने के लिये प्राणायाम करें! आतंक के खिलाफ लड़ाई मिलकर लड़े-मोदी काग्रेस मुक्त भारत का सपना उड़ गया क्या? नीलाम होंगी चित्रकार हुसैन की दुर्लभ पेंटिंग दुनिया छोड़ने के बाद करोड़ों का फायदा! नीट पीजी परीक्षा अपरिहार्य कारणों से स्थगित कभी भारतीय मेडिकल परीक्षा बेदाम होती थी!

प्रभावी नक्सल विरोधी रणनीति

नक्सलवाद के खिलाफ संघर्ष में सुरक्षा बलों ने पिछले दिनों छत्तीसगढ़ के अबूझामाड़ के जंगल में सोंपांचावा (माओवादी) के महासचिव और सर्वोच्च कमांडर नंगाला के शेष राव उर्फ बासवराजू को मार गिराया। उसके साथ 26 और नक्सली मारे गये। नक्सलवाद के उभार के बाद से यह पहला मौका है, जब महासचिव स्तर का व्यक्ति मारा गया है। बासवराजू को जिस ऑपरेशन के बाद लैटावा के लिए तो तात्काल का इस्तेमाल वस्तुली और मोटी कमाई के लिए करना शुरू कर दिया। तब से उनके प्रति समर्थन घटने लगा। अपने प्रभाव क्षेत्र में वे अवसर विकास के आधुनिक माध्यमों और प्रौदीकों, मसलन-रेलवे, लाइन, स्ट्रेशन, डक्यम, स्कूल-आदि को निशाना बनाते रहे। धूरे-धूरे उनके इस कृत्य को स्थानीय निवासी विकास विरोधी मानने लगे। जैसे-जैसे स्थानीय लोगों की समझ बढ़ी, नक्सलियों का आधार नक्सलीयों के बाद से यह पहला मौका है, जब नक्सलवाद के बाद से यह पहला मौका है, जब महासचिव स्तर का व्यक्ति मारा गया है। बासवराजू को जिस ऑपरेशन के बाद लैटावा के लिए तो तात्काल का इस्तेमाल वस्तुली और मोटी कमाई के लिए करना शुरू कर दिया। तब से उनके प्रति समर्थन घटने लगे। जैसे-जैसे स्थानीय लोगों की समझ बढ़ी, नक्सलियों का आधार नक्सलीयों के बाद से यह पहला मौका है, जब महासचिव स्तर का व्यक्ति मारा गया है। बासवराजू को जिस ऑपरेशन के बाद लैटावा के लिए तो तात्काल का इस्तेमाल वस्तुली और मोटी कमाई के लिए करना शुरू कर दिया। तब से उनके प्रति समर्थन घटने लगे। जैसे-जैसे स्थानीय लोगों की समझ बढ़ी, नक्सलियों का आधार नक्सलीयों के बाद से यह पहला मौका है, जब महासचिव स्तर का व्यक्ति मारा गया है। बासवराजू को जिस ऑपरेशन के बाद लैटावा के लिए तो तात्काल का इस्तेमाल वस्तुली और मोटी कमाई के लिए करना शुरू कर दिया। तब से उनके प्रति समर्थन घटने लगे। जैसे-जैसे स्थानीय लोगों की समझ बढ़ी, नक्सलियों का आधार नक्सलीयों के बाद से यह पहला मौका है, जब महासचिव स्तर का व्यक्ति मारा गया है। बासवराजू को जिस ऑपरेशन के बाद लैटावा के लिए तो तात्काल का इस्तेमाल वस्तुली और मोटी कमाई के लिए करना शुरू कर दिया। तब से उनके प्रति समर्थन घटने लगे। जैसे-जैसे स्थानीय लोगों की समझ बढ़ी, नक्सलियों का आधार नक्सलीयों के बाद से यह पहला मौका है, जब महासचिव स्तर का व्यक्ति मारा गया है। बासवराजू को जिस ऑपरेशन के बाद लैटावा के लिए तो तात्काल का इस्तेमाल वस्तुली और मोटी कमाई के लिए करना शुरू कर दिया। तब से उनके प्रति समर्थन घटने लगे। जैसे-जैसे स्थानीय लोगों की समझ बढ़ी, नक्सलियों का आधार नक्सलीयों के बाद से यह पहला मौका है, जब महासचिव स्तर का व्यक्ति मारा गया है। बासवराजू को जिस ऑपरेशन के बाद लैटावा के लिए तो तात्काल का इस्तेमाल वस्तुली और मोटी कमाई के लिए करना शुरू कर दिया। तब से उनके प्रति समर्थन घटने लगे। जैसे-जैसे स्थानीय लोगों की समझ बढ़ी, नक्सलियों का आधार नक्सलीयों के बाद से यह पहला मौका है, जब महासचिव स्तर का व्यक्ति मारा गया है। बासवराजू को जिस ऑपरेशन के बाद लैटावा के लिए तो तात्काल का इस्तेमाल वस्तुली और मोटी कमाई के लिए करना शुरू कर दिया। तब से उनके प्रति समर्थन घटने लगे। जैसे-जैसे स्थानीय लोगों की समझ बढ़ी, नक्सलियों का आधार नक्सलीयों के बाद से यह पहला मौका है, जब महासचिव स्तर का व्यक्ति मारा गया है। बासवराजू को जिस ऑपरेशन के बाद लैटावा के लिए तो तात्काल का इस्तेमाल वस्तुली और मोटी कमाई के लिए करना शुरू कर दिया। तब से उनके प्रति समर्थन घटने लगे। जैसे-जैसे स्थानीय लोगों की समझ बढ़ी, नक्सलियों का आधार नक्सलीयों के बाद से यह पहला मौका है, जब महासचिव स्तर का व्यक्ति मारा गया है। बासवराजू को जिस ऑपरेशन के बाद लैटावा के लिए तो तात्काल का इस्तेमाल वस्तुली और मोटी कमाई के लिए करना शुरू कर दिया। तब से उनके प्रति समर्थन घटने लगे। जैसे-जैसे स्थानीय लोगों की समझ बढ़ी, नक्सलियों का आधार नक्सलीयों के बाद से यह पहला मौका है, जब महासचिव स्तर का व्यक्ति मारा गया है। बासवराजू को जिस ऑपरेशन के बाद लैटावा के लिए तो तात्काल का इस्तेमाल वस्तुली और मोटी कमाई के लिए करना शुरू कर दिया। तब से उनके प्रति समर्थन घटने लगे। जैसे-जैसे स्थानीय लोगों की समझ बढ़ी, नक्सलियों का आधार नक्स

रूस-यूक्रेन करेंगे मृत और घायल सैनिकों की अदला-बदली

इस्तांबुल। रूस और यूक्रेन के प्रतिनिधियों ने सोमवार का करीब दो सप्ताह बाद प्रत्यक्ष शांति वार्ता के दूसरे दौर के लिए मुलाकात की और तुर्की में शांति वार्ता पर बढ़ी सहमति

सीजफार पर अटकी गत

अपने-अपने हजारों मृत सैनिकों के शव और गंभीर रूप से घायल सैनिकों की अलाप-बदली करने पर सहमति जताया गया। इसके अलावा वार्ता में तीन साल से जारी युद्ध को समाप्त करने की दिशा में काफ़ी प्रगति नहीं हुई। आधिकारिक जानकारी के अनुसार, यह वार्ता दोनों पक्षों द्वारा किए गए कई लंबे दूरी के हालों के एक दिन बाद हुई है, जिसमें यूक्रेन



ने रूसी हवाई छिकानों पर झेन हमला किया था और रूस ने यूक्रेन के खिलाफ युद्ध का सबसे बड़ा झेन हमला किया। यूक्रेनी प्रतिनिधिमंडल ने संवादाताओं से कहा कि कीब के अधिकारियों को दस्तवेज की समीक्षा करने और नियन्य लेने के लिए एक हफ्ते का वक्त चाहिए।

बताते हुए एक जापान प्रस्तुत किया था और रूस ने यूक्रेन के खिलाफ युद्ध का सबसे बड़ा झेन हमला किया। यूक्रेनी प्रतिनिधिमंडल ने बताया कि वार्ता की भेज पर रूस ने जंग खड़क करने के लिए क्रमशः (रूसी राष्ट्रिय भवन) की शर्तों को

संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष चुनी गई

पूर्व जर्मन विदेश मंत्री

च्यूर्योक। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने जर्मनी की पूर्व विदेश मंत्री एनालेना बेर्यबोक को अध्यक्ष चुन लिया। बेर्यबोक को 167 वोट मिले, जो जीतने के लिए जर्सी 88 वोटों के करीब दोगुने हैं। 14 देशों ने मतदान में भाग नहीं लिया। रूस ने एनालेना बेर्यबोक के चुनाव का विरोध किया और उस मतदान की मांग की। हालांकि रस्त की मांग की नहीं माना गया। जर्मनी ने पूर्व में हेल्मा शीमिड को संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष के लिए नामियन किया था, लेकिन बाद में उनकी जगह एनालेना बेर्यबोक को उम्मीदवार बनाया गया।

सांसद ने जो जबाब दिया, उसे सुनकर वहाँ मौजूद सभी लोग तालियां बजाते लगे। इस दौरान डीमके सांसद ने कहा कि हारो देश में बहुत कृति किया जाना बाकी है और जान भरने भी बहुत है, लेकिन दुर्भाग्य से हमारा ध्यान भटकाया जा रहा है। स्पेन में भारतीय समुदाय के लोगों से संवर्द्धिय प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की और अपेंशन स्टिंडो के बारे में जाकरी दी। साथ ही आंतकवाद के खिलाफ एकजुट होने और आवाज उठाने की अपील की गई। इसी दौरान एक व्यक्ति ने संवर्द्धिय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने के लिए एक व्यक्ति को अपील संवाद करने की वार्ता पर वक्त चाहिए।

जबाब पर एप्ले में खुब बड़ी तालियां

सांसद ने जो जबाब दिया, उसे सुनकर वहाँ मौजूद सभी लोग तालियां बजाते लगे। इस दौरान डीमके सांसद ने कहा कि हारो देश में बहुत कृति किया जाना बाकी है और जान भरने भी बहुत है, लेकिन दुर्भाग्य से हमारा ध्यान भटकाया जा रहा है। स्पेन में भारतीय समुदाय के लोगों से संवर्द्धिय प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की और अपेंशन स्टिंडो के बारे में जाकरी दी। साथ ही आंतकवाद के खिलाफ एकजुट होने और आवाज उठाने की अपील की गई। इसी दौरान एक व्यक्ति ने संवर्द्धिय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने के लिए एक व्यक्ति को अपील संवाद करने की वार्ता पर वक्त चाहिए।

राष्ट्रभाषा के सवाल पर कनिमोझी ने किया कमाल

मैट्रिड। डीमके सांसद कनिमोझी करुणानिधि के नेतृत्व

वाला संवर्द्धिय प्रतिनिधिमंडल फिलहाल स्पेन द्वारा पर डीमके है। स्पेन में एक कार्यक्रम के दौरान कनिमोझी से पूछा

गया कि भारत की राष्ट्रीय भाषा क्या है? इस पर डीमके

जवाब पर एप्ले में खुब बड़ी तालियां

जबाब पर एप्ले में खुब बड़ी तालियां